

धन्य है धर्म नगरी रेवतड़ा

जिनशासन की जाज्वल्यमान यशस्वी यशोगाथा के स्वर्णिम पृष्ठों में अनेक स्वनामधन्य महात्माओं, धर्मानुरागी सुश्रावकों एवं गाँवों-नगरों के नाम अंकित हैं।

राजस्थान की धन्य धरा में जालोर जिले में अवस्थित रेवतड़ा गाँव अपनी आस्था एवं श्रद्धा के कारण जगप्रसिद्ध है।

इस नगर की गौरव गाथा का शुभारंभ विक्रम संवत् १६७५ माघ सुदि २ के शुभ दिन सर्वप्रथम जिनशासनरत्न शा. भारतमलजी टीलाजी वेदमुथा (जालोर) यहाँ व्यापार हेतु आए थे। तत्पश्चात् मोदरा निवासी हीराजी बालर यहाँ पधारे, जिन्हें हिराणी परिवार के रूप में जाना जाता है। विक्रम संवत् १८२२ में वेरठ निवासी देदाजी मांडीत परिवार का यहाँ पदार्पण हुआ। लगभग २०० वर्ष पूर्व लालन गोखीय सोफाड़िया परिवार सोफाड़ा गाँव से आए। इसी भूंखला में उम्मेदाबाद (गोल) से लुक्छ परिवार एवं तुरा गाँव से कवाड़ मुथा परिवार, ठाकुर साहब के साथ यहाँ आकर बस गये। परिवारजन अपने संग नित्य पूजा के लिए श्री शांतिनाथ प्रभु की पंचधातु प्रतिमा एवं श्री सिद्धचक्रजी लेकर आए थे। नगर के पुण्ययोग से विचरण करते हुए साध्वीजी भगवंत का आगमन हुआ। उनकी सदप्रेरणा से प्राचीन आदिनाथ भगवान की ११ ईच की प्रतिमा पूजा के लिए स्थापित की गई।

संवत् १८४० में वेदमुथा परिवार की पूजनीय दादीजी श्रीमती चन्द्रादेवी केरौंगजी सती हुई तथा रेवतड़ा नगर में इनका मंदिर भी बना हुआ है।

रेवतड़ा नगर में जिनालय निर्माण का शिलान्यास, विक्रम संवत् १९५१ में किया गया, तब इस नगर में जैन घरों की संख्या २८ थी। सन् १९५५ में आचार्य भगवंत श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. ने आहोर नगर में ९०० जिनर्षियों की अंजनशलाका करवाई, तब रेवतड़ा मंदिरजी हेतु श्री आदिनाथजी, श्री शांतिनाथजी, श्री महावीरस्वामीजी, श्री पार्श्वनाथजी एवं अधिष्ठात्यक गौमुख यक्ष एवं चक्रेश्वरी देवी की प्रतिमाजी को प्रतिष्ठा के लिए रखा।

प्रतिमाओं की अंजनविधि के पश्चात् विक्रम संवत् १९७१ को पूज्यपाद आचार्य श्री धनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

से प्राणप्रतिष्ठा करवाने की भावभरी विनंती की गई। उस समय जैन घरों की संख्या ३५ थी। प्रबल पुण्योदय से पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री धनचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा., परम पूज्य श्री हर्षविजयजी म.सा., परम पूज्य श्री तीर्थविजयजी म.सा. के कर कमलों से जिनालय की प्रतिष्ठा हर्षोल्लास के वातावरण में सानंद संपन्न हुई। जिनालय प्रतिष्ठा महोत्सव के बाद नगर के पुण्य-पराग निरन्तर बढ़ने लगे और धार्मिक एवं सामाजिक शुभ कार्य होते रहे।

विक्रम संवत् २०१८ में जिनालय का ध्वजदंड जीर्ण-शीर्ण होने से आचार्य श्री लब्धचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में अष्टाष्टिका महोत्सव में नवीन ध्वजदंड स्थापित किया गया।



पूज्यपाद आचार्य भगवंतों के निर्देशानुसार प्राचीन आदिनाथ भगवान की प्रतिमा को नूतन जिनालय में बिराजमान करने का निर्णय श्रीसंघ द्वारा लिया गया। विक्रम संवत् २०६३ माघ सुदी १३ को प्राचीन श्री आदिनाथजी, श्री गौतमस्वामीजी एवं श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की प्रतिमा को पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती संयम स्थविर मुनिराज श्री शान्तिविजयजी म.सा. के शिष्य मुनिराज श्री जयरत्नविजयजी म.सा. (वर्तमान में आचार्य श्री जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.) के करकमलों से चतुर्विध संघ की उपस्थिति में हर्षोल्लास के साथ बिराजमान किया गया।

वर्तमान में रेवतड़ा, धर्मनगरी के रूप में विख्यात है। यहाँ जैन धर्मावलम्बियों के लगभग २७० घर हैं। रेवतड़ा नगरी का परम सौभाग्य है कि इस नगर से ८ मुमुक्षु लाड़ले भाई-बहनों ने दीक्षा अंगीकार की है और वे भगवान महावीर के अनुगामी बन स्व-पर कल्याण कर रहे हैं तथा उनके पथ पर अग्रसर हैं। रेवतड़ा नगर में अन्य समुदायवर्ती लोगों के लगभग ३५०० घर विद्यमान हैं।

धन्य रेवतड़ा की माटी को... धन्य है वातावरण में धुली धर्म-अध्यात्म की स्मृति को।

देव-गुरु-धर्म की कृपा रेवतड़ा नगर पर इसी तरह बनी रहे...